वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर – 2023

- भगवान् देवात्मा की देव वाणी
- जोरदार शक्तियां और हमारी लाचारी
- मनुष्य को असत्य की ओर ले जाने वाली शक्तियां।
- हृदय परिवर्तन
- विज्ञान और रूढ़िवादी धार्मिकता
- परलोक के सम्बन्ध में वैज्ञानिक सत्य?
- अपने आपका ज्ञान – 3
- शुभ संग्राम

भगवान् देवात्मा की अमूल्य देव वाणी

"तुम्हारा अस्तित्व स्वप्न नहीं, किन्तु सत्य है। इस के बिगड़ने और बनने अर्थात् विनाश और विकास सम्बन्धी नियम भी अटल हैं। विनाशकारी और विकासकारी गतियां भी सत्य हैं। विनाशकारी गतियों के अधीन रह कर जैसे तुम अपने अस्तित्व की रक्षा नहीं कर सकते वैसे ही किसी अपने जैसे किसी और अस्तित्व की भी रक्षा नहीं कर सकते। विनाशकारी गतियों से निकलने और विकास लाभ करने के लिए तुम्हें अपने अस्तित्व के विषय में उन दुर्लभ सत्यों की ज्योति और विविध शक्तियों के लाभ करने की आवश्यकता है कि जो देव धर्म प्रवर्तक के देव जीवन में आविर्भूत हुई हैं, अन्यथा हित अहित के सच्चे विवेक की अपने अस्तित्त्व की रक्षा के लिए आकांक्षा नहीं हो सकती। ऐसा हो कि यह विवेक और आकांक्षा तुम्हारे भीतर जाग्रत वा उन्नत हो।"

(लेख और उपदेश भाग 3)

***आत्म-बोध और आत्म-ज्ञान के विषय में देवात्मा की देववाणी।**

1-मनुष्य होकर जो जन अपने हि अस्तित्व के विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने की कोई आकांक्षा नहीं रखता, उससे बढ़कर कृपापात्र और कौन हो सकता है?

2-मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने अस्तित्व विशेषकर अपने आत्मा के विषय में सत्य बोध और सत्य ज्ञान लाभ करने का आकांक्षी होने से बढ़कर कोई और बड़ा अधिकार नहीं, क्योंकि उससे नीचे पशु जगत् के किसी जीव को अपने अस्तित्व के विषय में इस प्रकार के ज्ञान लाभ करने का कोई अधिकार प्राप्त नहीं।

3-मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान लाभ करने की आकांक्षा रखकर भी, परन्तु अपनी अयोग्यता के कारण उसके विषय में किसी सत्य के दर्शन वा उपलब्ध करने के योग्य होना, अथवा ऐसी आकांक्षा से हि विहीन होकर अपने आत्मा के विषय में पूर्ण अन्धकार और अज्ञान की दशा में रहना, उसकी अत्यन्त कृपापात्र दशा है।

4-मनुष्य होकर किसी जन के लिए अपने आत्मा के सम्बन्ध में सत्य बोध और सत्य ज्ञान लाभ करने के योग्य होना और उसकी प्राप्ति का शुभ अवसर पाना उसका महा श्रेष्ठ अधिकार है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। : -श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।

DEV SAMAJ (G)
Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh
Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414

धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 10
अक्तूबर - 2023
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना

जोरदार शक्तियां और हमारी लाचारी

भगवान् देवात्मा धर्म के अद्वितीय सूर्य उदय हुए हैं। उन्होंने धर्म की विज्ञान मूलक सचाईयां प्रकट की हैं। उन्होंने यह रोशन किया है कि जैसे रेल के इंजन में इतनी ताकत (शक्ति) होती है कि वह रेल के कई कई भारी डिब्बों को खींच कर ले जाता है, न केवल खाली डिब्बों को बल्कि पत्थर वा कोयलों से भरे हुए डिब्बों को सैंकड़ों मील ले जाता है, वैसे ही इंसान के भीतर भी जोरदार शक्तियां मौजूद हैं जो उसको घसीट रही हैं।

शक्तियां इतनी जोरदार होती है कि मनुष्य उसके सामने लाचार और कमज़ोर है। पंजाब में जैसे नशों की बाढ़ आई हुई है, नौजवान लड़के नशे करने के लिए कैसे मारे मारे फिरते हैं। घर में चोरी करते हैं और बाहर से भी चोरी करते हैं। वह अपनी शक्तियों के हाथों इतने लाचार हैं कि उनको अपने परिवार की चीखें सुनाई नहीं देती। उन्हें माता - पिता का रोना, पत्नी का दुःखी और मायूस चेहरा, अपने बच्चों की लाचार हालत, नहीं तड़पाती, बल्कि अपनी शक्तियों के हवाले होकर वह उन्हीं को मारने और पीटने के लिए मजबूर हो जाते हैं।

एक अकाउंटेंट था। वह बहुत अच्छा गाता था। वह बुरी संगत में पड़कर शराब पीने लगा। उसका अच्छा गाना सुनकर लोग उसे शराब पिला देते। एक दिन वह बहुत बीमार हो गया, अपने होश गंवा बैठा। डॉक्टर ने बहुत कोशिश करके उसे बचाया। उसने प्रतिज्ञा की कि आज से वह फिर कभी शराब नहीं पिएगा। परन्तु **जोरदार नीच शक्तियों के हवाले होकर मनुष्य अपनी प्रतिज्ञाएं तोड़ देता है।** उसने दो साल बाद फिर शराब पी ली और पागल हो गया और ठीक ना हो सका।

एक जन का वर्णन है, कि वह काम वासना का इस कदर दास हो गया, कि वह अपनी पत्नी के होते हुए भी एक या दूसरी और स्त्री के साथ अनुचित सम्बन्ध रखने के लिए अपने आप को मजबूर पाता था। बाप का वह इकलौता बेटा था, उसका बाप बूढ़ा था। उस के यहां भी एक ही लड़का था और घर में और कोई बच्चा न था। इसलिए वह क्या अपनी पत्नी और क्या अपने बच्चे का एक ही सहारा था। वह अपने पिता के सम्बन्ध में खुद भी स्नेह का भाव रखता था, अपनी पत्नी और बच्चे के लिए भी स्नेह भाव रखता था। फिर भी अपनी नीच वासना के वश होकर वह कई कई रातें घर से

बाहर रहता था और इसलिए अपने पिता और अपनी पत्नी के लिए बहुत बड़े दुख का कारण बनता था। कुछ दिन की गैरहाज़री के बाद जब वह घर में आता था और अपने पिता और पत्नी के दुखिया चेहरों को देखता था, तो फूट – फूट कर रोता था और फिर कई – कई दिन अपने घर से बाहर नहीं जाता था, परन्तु यह उसका सिलसिला अधिक समय तक नहीं चलता था। काम वासना का भूत उसको अपनी पत्नी और पिता के सम्बन्ध में बेवफा बनाने के लिए मजबूर कर देता था। एक बार महोत्सव के अवसर पर सभा परिचालक ने इस कामी पुरुष की अपने बूढ़े पिता और गरीब पत्नी के सम्बन्ध में बेवफाई का हाल बताया और उसके बूढ़े पिता और गरीब पत्नी के दुखों का वर्णन किया। उस समय यह कामी पुरुष सभा में वर्तमान था। उसके दिल पर इस कथा का इस कदर गहरा असर हुआ, कि वह खड़ा होकर कहने लगा, कि मैं ही वह शैतान हूँ जिसने अपने पिता और अपनी पत्नी को सताया है। उसके इस प्रकाश से सभा में सन्नाटा छा गया, परन्तु क्या इस प्रकाश के बाद उसके जीवन ने कोई पलटा खाया? कुछ समय के लिए अवश्य उसको धक्का लगा, परन्तु उच्च संगत से कटकर वह फिर नीच गति के गार में जा गिरा। **भीतर की जोरदार शक्तियों के मुकाबले में उसके भीतर का उनसे बचने का भाव कमज़ोर हो चुका था। नीच शक्तियां इंसान को बहुत कमज़ोर बना देती हैं।**

भगवान् देवात्मा के मिशन के एक कर्मचारी थे, वह कर्मचारी बहुत होनहार थे। देव समाज में बहुत शानदार वक्ता थे, देव समाज के अख़बारों के सम्पादक थे। उनके द्वारा रचित बहुत सारे भजन आज भी समाज में प्रचलित हैं। भगवान् देवात्मा के जमाने में वह कर्मचारी थे परन्तु अफसोस कि दो एक महा खौफनाक नीच अनुरागों में फंस गए। जब जब उन्हें भगवान् के देव प्रभाव मिलते वह अपने नीच जीवन को सामने लाकर रोते, दुखी होते और अपना रूप पूजनीय भगवान् के सामने साफ साफ बताते। उनके पत्र को हम नीचे दर्ज करते हैं : –

हे मेरे परित्राता भगवान!

जीवन ज्योति के सूर्य, आत्म अंधकार के दिखाने और दूर करने वाले, मेरी प्रकृत छवि को मेरे सन्मुख लाकर मेरे भीतर प्रकृत हित की आकांक्षा उत्पन्न और वर्द्धन करने वाले मेरे परम हितकर्ता भगवन!

हे भगवन! जितनी यह परम हितकर ज्योति मुझे आपके दरबार से प्राप्त होती है, जितनी कुछ धर्म सूर्य की किरणें मुझे मिलती हैं, उतना ही उसमें अपनी मलिन, अधम, अंध और अति भ्रान्ति परिपूर्ण अवस्था का पता लगता है, और अपना आप महा नीच और हीन और भूला भटका हुआ दिखाई देता है। ऐसा एक एक बार जी में आता है, कि अपने पैरों से लेकर सिर तक अपनी सारी खलड़ी उधेड़ डालूं, परन्तु हाय! इससे भी क्या होगा, रोग बहुत अन्दर है।

भगवन! मुझे आग में झोंक दो, मुझे लोहे पर तपा दो। मेरी खाल उधेड़ दो, मेरे ऊपर कोई जादू कर दो। हाय! जैसे हो, जिस तरह हो, मेरा नीच रूप बदल दो, मेरी गंदी, मैली, निकम्मी, मनमुखी, अंधी प्रकृति निकाल दो.... हाय! मैं महा मूढ़, महा नीच, महा अज्ञानी न समझा कि जिनका मैं जाप करता हूं, वह भुतने मुझ पर सवार होते जाते हैं। वह नीच वजूद हैं और मैं उस जाप से जीवन दाता के निकट नहीं, किन्तु

उन नीच जीवों के निकट होता जाता हूं, मेरे दिल पर उनका अधिकार होता जाता है, मैं उनके हाथों में बिकता जाता हूं, और उनको खुश और प्रसन्न देखने के लिए अपने जीवन स्रोत से विमुख, गुमराह और दूर होता जाता हूँ। अपने जीवन भंडार से परे जा रहा हूं। उनकी आज्ञाएं भंग करके अपनी मौत सहेड़ रहा हूं और अपनी नीचता के पक्षपात में जो उलटी दलीलें और चिन्ताएं घड़ रहा हूं, उनसे अपना और भी नाश कर रहा हूं और अपना आप मैला, काला, दुर्बल और गंदा, दास और बंधवा बना रहा हूं।"

इतनी प्रबल बचने की इच्छा रखकर भी वह अपने नीच अनुराग की शक्तियों से बच न सके और देवात्मा से कटकर बर्बाद हो गए।

"देखूं मैं साफ हानि, फिर भी हूं लाचार मैं।"

हमारे आस पास लाखों दृष्टांत ऐसे ही मौजूद हैं जहां एक एक इंसान अपनी नीच शक्तियों के हाथों लाचार है। हमारे जीवन भी इसी बात की शहादत देते हैं।

गौतम गोनियाना

मनुष्य को असत्य की ओर ले जाने वाली शक्तियां।

पशु - जगत से मनुष्य - जगत के विकसित होने पर यद्यपि उसमें कुछ नई मानसिक शक्तियां बीज - रूप में उन्नत हुई, परन्तु उसकी गठन पूर्ण नहीं हुई। अर्थात जैसे उसका शरीर अपने सब आवश्यक अंगों के विचार से पूर्णता को प्राप्त हो चुका था, वैसे उसका आत्मा उन सब आवश्यक शक्तियों को प्राप्त नहीं हुआ, कि जो उसकी गठन को पूर्ण करके, उसे एक ओर सब प्रकार की नीच गतियों के विनाशकारी प्रभावों से रक्षा पाने और दूसरी ओर विश्व के प्रत्येक जगत के सम्बन्ध में उच्च - गति परायण बना कर लगातार विकास लाभ करने के योग्य बना सके। इसीलिए अब तक मनुष्य जगत के करोड़ों आत्मा, अपनी अपूर्ण गठन के विचार से जिस शोचनीय अवस्था में है, उस में उनके लिए **सत्य - अनुरागी बनना ही असम्भव है।** ऐसे आत्माओं की गठन में केवल यही नहीं कि उच्च - गति - दायक नाना शक्तियों का ही पूर्ण रूप से अभाव है, किन्तु ऐसी कितनी ही शक्तियां वर्तमान हैं, कि जो समय समय में उनके हृदय को **सत्य के विरुद्ध** असत्य की ओर ले जाने की प्रबल रूप से प्रेरणा करती रहती हैं। इन शक्तियों के अधीन रह कर, उनके लिए असत्य को चाहना और **असत्य - परायण** बनना अवश्यम्भावी है। जिन लोगों की आत्माओं में कल्पना विषयक मानसिक - शक्ति, धन, धरती, मान और प्रशंसा विषयक वासनाओं, दंभ और घमंड विषयक अहं भावों, हिंसा - प्रतिशोध और ईर्ष्या आदि विषयक उत्तेजनाओं का आधिपत्य हो, उनकी हृदय - भूमि से सत्य का अनुराग उसी प्रकार प्रस्फुटित **नहीं** हो सकता, जिस प्रकार मुर्गी के अंडे से कभी आदमी का बच्चा नहीं निकल सकता। उपरोक्त शक्तियों के अधीन आत्माओं के लिए (और करोड़ों ही आत्मा इन शक्तियों के अधीन हैं) असत्य की ओर स्वभावतः आकृष्ट होना, अनजाने वा जानबूझ कर असत्य बोलना, असत्य मानना,

असत्य का समर्थन और असत्य का प्रचार करना एक अवश्यम्भावी बात है।

कल्पना के दास नाना प्रकार की कल्पित परन्तु मिथ्या बातों को मान कर खुश रहते हैं। धन, धरती, मान, प्रशंसा आदि वासनाओं के दास, उनकी प्राप्ति के लिए झूठी गवाहियां देते हैं, झूठे मुकदमें लड़ते है, झूठी कविताएं रचते हैं, अफसरों वा अमीरों, वा औरों की झूठी तारीफ़ करते है, झूठे कागज़ बनाते हैं, झूठे विज्ञापन देते हैं। **दम्भी और घमंडी** बन कर नाना प्रकार से कपटता और झूठ का व्यवहार करते हैं। अन्य सम्प्रदायों की सच्ची और हितकर शिक्षा पर आक्षेप करके उसे उल्टा प्रदर्शन करते हैं, और अपने सम्प्रदाय की झूठी और पाप-मूलक शिक्षा का भी समर्थन करते हैं। दीनता दिखाने के लिए अपने भीतर जो सच्चा गुण भी वर्तमान हो, उसका वर्तमान होना नहीं मानते। मंदिरों, मस्जिदों, गिरिजाओं और पगोडाओं आदि **पूजा** के स्थानों में ऐसे भजन वा गीत गाते हैं, कि जिन के साथ उनके हृदय का कुछ भी मेल नहीं होता, और मुंह से ऐसी बातों की प्रार्थनाएं करते हैं, जिनको उनका हृदय कभी नहीं चाहता। प्रतिशोध लेने के लिए औरों पर जानबूझ कर नाना प्रकार के मिथ्या दोष और अपराध (आरोप) लगाते है। धन वा मान वा किसी सुख आदि की हानि के डर वा किसी उचित दण्ड से बचने के लिए झूठ बोलते हैं। ईर्ष्या के वश होकर, दूसरे की सच्ची तारीफ़ भी सुन नहीं सकते और उसकी झूठी निंदा करके वा सुन के तृप्ति लाभ करते हैं, इत्यादि इत्यादि।

अब केवल उपरोक्त प्रकार की प्रकृति पाकर, वा रखकर अथवा पूर्वोक्त विविध शक्तियों के दास रहकर किसी मनुष्य के लिए भी, (चाहे वह किसी धर्म-सम्प्रदाय वा समाज का हो) **सत्य का आकांक्षी वा अनुरागी बनना ही सम्भव नहीं है,** इसलिए पृथ्वी के सब देशों, नगरों और गांवों में जहां कहीं मनुष्य रहता है, वहीं नाना प्रकार के असत्य का प्रकाश और प्रचार पाया जाता है।

इधर एक ओर करोड़ों मनुष्यों के लिए उनकी **आत्मिक अपूर्ण गठन** और उसमें नाना ऐसी शक्तियों की वर्तमानता, कि जो उसे नाना प्रकार से असत्य की ओर ले जाने, असत्य के ग्रहण करने और असत्य के पथ पर चलने के लिए **मज़बूर** करती है, उधर असत्य के ग्रहण करने से उसे अपने नाना सम्बन्धों में कितनी ही बार कई प्रकार का **सुख और लाभ** भी दिखाई देता है, ऐसी अवस्था में केवल यही नहीं, कि उसे असत्य की महिमा नज़र आती है, वरन अवसर अवसर पर उसकी अत्यन्त आवश्यकता भी प्रतीत होती है। यह आवश्यकता उसे अपने निज के लिए भी अनुभव होती है, और समाज वा सोसाईटी के लिए भी। इसीलिए इस भाव से प्रचालित होकर उसने असत्य की आवश्यकता और महिमा को नाना प्रकार से प्रकाश किया है। यथा- -

"मैं तां झूठ अक्कठे जम्मे, झूठ आवे मेरे सयां कम्मे"

अर्थ : मैं और झूठ तो एक साथ जन्मे हैं। झूठ तो मेरे सैंकड़ों काम आता है।

(एक पंजाबी कहावत)

"दरोग़ मसलहत आमेज़ बेह, अज़रास्ती फितना अन्गेज़"

अर्थ : जिस सत्य के प्रकाश में विपद उत्पन्न हो,

उसकी अपेक्षा झूठ का व्यवहार बेहतर है।
(शेख सादी)

"न ब्रूयात सत्यमप्रियम"।
अर्थ : अप्रिय सत्य न बोलना चाहिए।
(एक ऋषि का वचन)

"झूठ के बिना काम नहीं चल सकता।"
(विविध पेशे वालों का वचन)

ईसाईयों के एक बड़े फ़िरके में इस बात की खुल्लम-खुल्ला शिक्षा दी गई है, कि अपने साम्प्रदायिक मत के फैलाने में मिथ्या का व्यवहार उचित और पुण्य कर्म है।

आर्य समाज के संस्थापक ने अपनी "सत्यार्थ प्रकाश" नामक पुस्तक में श्री शंकराचार्य के वेदान्त मत को मिथ्या बता कर यह लिखा है कि यदि उन्होंने यह मिथ्या मत जैनियों को परास्त करने के लिए ग्रहण किया हो, तो "अच्छा" था।

हर देश के प्राय: सब राजनीतिज्ञ लोग प्रजा के शासन में यथा अवसर कुटिल-नीति और मिथ्या का अवलंबन आवश्यक और विधेय बताते है।

"Everything is fair in love and war"

अर्थ : लड़ाई और स्त्री-पुरूष सम्बन्धी प्रेम के मामलात में सब कुछ जायज़ है।

असत्य ने प्राय: मनुष्य मात्र पर ही अपना मोहिनी मन्त्र डाल कर उन्हें अपना अनुगत बना लिया है। असत्य परायण बन कर मनुष्य के **धर्म के नाम से भी असत्य का बहुत बड़ा प्रचार किया है।** धर्म के नाम से उसने नाना प्रकार की **झूठी गप्पों** अथवा मिथ्या कल्पनाओं को फैलाया है - नाना प्रकार की मनोवान्छनाओं के पूर्ण कर्ता देवी और देवताओं, सेंट वा साधुओं, और पीरों और उनकी करामातों आदि की सृष्टि की है। स्वर्ग और नरक सम्बन्धी नाना प्रकार की रोचक और भयानक परन्तु झूठी गप्पें घड़ी हैं। यह सब गप्पें पुस्तकों में लिखी गई हैं, और वह पुस्तकें **धर्म-पुस्तकें** कहलाती हैं। एक ओर साधारण जनों में विचार, आलोचना और युक्ति आदि की अत्यन्त हीन अवस्था और दूसरी ओर उसमें कल्पना और विश्वास शक्ति की प्रबलता ने उपरोक्त सब प्रकार के मिथ्या के प्रचार में बहुत बड़ी सहायता की है। धर्म विषयक बातों में अन्ध **विश्वास** (Faith) की बहुत बड़ी महिमा प्रचलित की गई है। उसमें युक्ति वा तर्क का प्रयोग अनुचित समझा गया है। यहां तक कि वर्तमानकाल में भी यदि एक "ब्राह्मों" प्रचारक, इस वाक्य को बहुत ज़ोर के साथ उच्चारण करता है कि: -

"विश्वासो धर्म मूलं हि"। अर्थात ईश्वर नामक एक देवते में विश्वास ही धर्म का मूल है, तो उसी का एक आर्य, मुसलमान, या इसाई भाई, उसमें कुछ और अधिक करके यह कहता है, कि "ईश्वर" नामक देवते के भिन्न उसकी रची हुई, इस या उस पुस्तक पर भी विश्वास करना ज़रूरी है। धर्म के नाम से भी केवल विश्वास और अन्ध-विश्वास की पुकार रही है। **धर्म की बुनियाद यही अन्ध-विश्वास रहा है।** यह कुसंस्कार-मूलक महा हानिकारक विश्वास मिथ्या कल्पना अथवा असत्य का साथी है, और इसी कारण करोड़ों कल्पना-प्रिय नर-नारी गण, कि जो इस **अन्ध-विश्वास** की प्रबल शक्ति के अधीन हैं, ऐसे किसी साक्षात से साक्षात असत्य के त्याग और सत्य के ग्रहण करने के

इच्छुक अथवा योग्य नहीं, कि जिसे वह इसी पृथ्वी में परीक्षा के द्वारा देख वा जान सकते हैं। यह कुसंस्कार और कल्पना - परायण लोग परीक्षा के महा हितकर नियम की ही कुछ महिमा नहीं देखते। वह परीक्षा की अपील ही नहीं सुनते। परीक्षा उनके निकट कोई चीज़ नहीं। अन्ध - विश्वास के पक्षपाती डरते हैं कि कहीं परीक्षा की कसौटी पर रखने से वह अपने पिछले विश्वास को ही न खो बैठें। उन्हें किसी विश्वास की ज़रूरत है, न कि सत्य की। सत्य की महिमा उनसे पूर्णतः छिपी हुई है। वह जैसे चोरी, व्यभिचार, रिश्वत आदि बहुत सी पाप - क्रियाओं में कई प्रकार का सुख और लाभ अनुभव करते हैं, वैसे ही असत्य - मूलक नाना अन्ध - विश्वासों को रखना और उनका प्रचार करना अपने और सोसाईटी के लिए कई प्रकार से लाभदायक समझते हैं। ऐसे लोगों में से कितने ही जन धर्म को भीतर से ढकोसला मानकर भी उसका बाहर से स्वांग भरना और जानबूझ कर भी किसी मिथ्या विश्वास का इकरार और प्रचार करना आवश्यक समझते हैं और ऐसा करने से अपने हृदय में सुख और तृप्ति लाभ करते हैं।

- मुझ में देव जीवन का विकास - 1

हृदय परिवर्तन

विविध सम्बन्धों में मेरी ईर्ष्या मूलक नीच गतियां

एक सेविका लिखती हैं

(1) ईर्ष्या भाव से परिचालित होकर मैं कई सम्बन्धों में बिगाड़ पैदा करती रही हूं। मेरी एक चाची जो हमारे साथ रहा करती थीं, वह बहुत परिश्रमी थीं, घर का सारा काम करती थीं, खाना भी तैयार करती थीं, यहां तक कि मुझे भी वही सम्भालती थीं। और मुझे समय पर खाना खिला कर स्कूल भेजती थीं, परन्तु मैं अपनी उपकारी चाची जी के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती थी। एक दिन चाची जी ने विशेष भोजन बनाया और सबको खिलाया। मैं घर में नहीं थी। ज़्यादा देर तक बाहर खेलती रही थी। घर आने पर मुझे चाची जी ने कहा कि तुझे खाने की क्या आवश्यकता है? खेल कर अपना पेट भर ले। बस फिर क्या था, मेरे दिल में आया कि इन को मज़ा चखाऊंगी। रात को खाना बनाते हुए जब चाची जी किसी काम के लिए दूसरे कमरे में गईं, तो मैं रसोई में गई और चावलों में कंकर, दाल में रेत, सब्जी में नमक मिर्च ज्यादा डालकर बाहर आ गई। खाना खाते वक्त परिवार के सब मेम्बरों ने चाची जी को बहुत बुरा भला कहा, उन्होंने दोबारा खाना बनाया और घर के कोने में बैठ कर रोती रहीं। ईर्ष्या भाव के कारण अपनी उपकारी चाची के सम्बन्ध में मेरा कैसा भयानक सलूक! सत्संग में बैठ कर मुझे अपनी यह घटना अब याद आ रही है और बहुत दुख हो रहा है। सत्संग से जाकर मैं अपनी चाची जी से क्षमा मांगूगी। उन्हें सिर झुका कर प्रणाम किया करूंगी। अभी तक मैंने उन्हें कभी प्रणाम नहीं किया।

(2) एक लड़की मेरे साथ पढ़ा करती थी। उसकी लिखाई बहुत सुन्दर थी। मेरे अध्यापक उसकी लिखाई की बहुत प्रशंसा करते थे। यह सुन कर मेरे अन्दर ईर्ष्या का भाव भड़क उठा। एक दिन जब वह लड़की पानी पीने गई तब

पीछे से मैंने उसकी स्लेट उठाई और कितने ही अक्षरों को गलत कर दिया और फिर उसी तरह से सलेट को उल्टा करके उसकी सीट पर रख दिया। अध्यापक ने उसकी कई गलतियों को देख कर उसको झिड़कियां दीं। जब मैं उस लड़की के पास से गुज़री, तो मैंने उससे कहा - अपनी सुन्दर लिखाई पर फूलती रहती हो, गलतियां तो तुम्हारी इतनी निकली हैं। अब मुझे महसूस हो रहा है कि मेरे ईर्ष्या भाव ने मुझसे कैसी भयानक गल्तियां करा दी हैं। अब जब भी वह लड़की मिलेगी, तो उससे माफी मांगूगी और अपनी काली भुतनी सूरत को उसके सामने पेश करूंगी।

(3) एक दिन मैं अपने ताया जी के साथ अपने खेत में गई तो वहां देखा कि बहुत से मजदूर ककड़ियां तोड़ने में लगे हुए हैं। उनके बच्चे खेल रहे हैं और ककड़ियां तोड़ कर खा रहे हैं। मैंने भी उनकी टोली में खेलना चाहा, लेकिन उन्होंने मुझे अपने साथ खिलाना पसंद नहीं किया। मैं ईर्ष्या द्वेष से भर गई। उन बच्चों के हाथ से ककड़ियां छीन कर फैंक दीं। वह बेचारे रोने लगे। जहां वह बच्चे खेल रहे थे, वहां मैंने बहुत से कीकर के कांटे बखेर दिए। थोड़ी देर में जब वह बच्चे वहां फिर खेलने लगे, तो कांटे उनके पैरों में चुभ गए। उनके पावों से खून बहने लगा। अपने बच्चों को रोते देख कर उनकी माताएं भाग कर आई ओर उनके पांव से कांटे निकालने लगीं। मैं चुपचाप दूर बैठी तमाशा देखती रही। इस भयानक घटना को काफ़ी दिन हो गए हैं, लेकिन मुझे कभी अफ़सोस नहीं हुआ था। अब सत्संग में बैठकर यह घटना याद आकर बहुत दुखी कर रही है। अब मुझे रास्ते में कहीं कांटे पड़े दिखाई देते है... तो मैं उन्हें उठा कर ऐसी जगह फैंक देती हूं जहां से कोई न गुज़रता हो।

(4) मैं एक ईसाइयों के बोर्डिंग में रहकर पढ़ती थी। मेरी सीट के साथ ही एक बंगाली लड़की की सीट थी। जब मैं नइ नई बोर्डिंग में दाखिल हुई थी, तब उसने मेरा दिल लगाने में बहुत सहायता की थी। वह बंगाली लड़की अपनी चीज़ों की बहुत तारीफ़ करती थी। उसके पास एक बहुत सुन्दर फ्राक थी। वह उस फ्राक की बहुत ताारीफ़ करती और सबको दिखाती थी। मैं ईर्ष्या द्वेष से जल उठी। एक दिन मौका पाकर मैंने उसकी फ्राक निकाली और कैंची से जगह जगह काट दी और उसकी तह लगाकर उसके बक्स में रख दी। जब उस लड़की ने वह फ्राक निकाल कर पहनी, तो वह बेचारी उसको जगह जगह से कटी देख कर दुःख के आंसू बहाने लगी और मैं खुश होकर तालियां बजाने लगी।

ऐसी कितनी ही घटनाएं मेरे सामने आ रही हैं। ऐसी पाप मूलक क्रियाएं करके मैं धन्य - धन्य महसूस करती थी परन्तु अपने आपको भेड़िया प्रमाणित करती थी। देव प्रभावों को पाकर मुझे अपने अन्दर का ईर्ष्या भाव दिखाई दिया है। यदि वह लड़की मिल जाए तो उससे माफ़ी मांगू। अपने दिल को शान्त करने के लिए मैंने एक गरीब लड़की को अपना एक सूट दिया और उसको कारण भी बताया कि मैं यह सूट क्यों दे रही हूं। मनुष्य की कैसी अहिंसक प्रकृति!

एक थानेदार ने सैकड़ों रुपये रिश्वत के वापिस किए

श्रीमान गिरवर प्रसाद जी लिखते हैं :-

मैं और मेरे मित्र पण्डित विष्णुदत जी कालेज में साथ पढ़ते थे। मैं तो देव समाज में काम करने लग गया और वह थानेदार बन गए। अम्बाला

शहर में वह थानेदार की हैसियत से काम कर रहे थे। उन्हें देव समाज की पुस्तकें पढ़ने का मौका मिला और उन्हें महसूस हुआ कि उन्होंने लोगों से रिश्वतें ली हैं। उनको वापस करने का उनके अन्दर प्रबल भाव पैदा हुआ। वह अम्बाले से दिल्ली अपने घर गए। रिश्वत का जितना रुपया उनके पास रखा था, उसको लेकर वह अम्बाले आ गए। यह बात 65 - 70 वर्ष पहले की है।

(1) हम दोनों तहसील जगाधरी के एक गांव में पहुंचे। इन्होंने एक दुकानदार से साबुन की टिकिया खरीदी थी और दुकानदार ने कुछ पैसे अधिक कीमत के ले लिए थे। इन्होंने उसे कहा कि तुम डिफैन्स रूल की जद में आ गए हो। बेचारा दुकानदार घबरा गया और उसने सौ रुपये रिश्वत के देकर अपना पीछा छुड़ाया। हमारे जाने पर दुकानदार को बुलाया गया। गांव के बहुत से लोग इकट्ठे हो गए। पण्डित विष्णुदत ने कहा कि भाई! मैं तुम्हारा अपराधी हूं। मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया था। मुझे क्षमा करो और अपना यह रुपया स्वीकार करो। उसने बड़ी मुश्किल से अपने यह रुपये वापिस लिए। गांव के लोग कह रहे थे कि हमने अपनी आयु में ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा।

(2) अगले रोज़ हम एक और गांव.....में पहुँचे जो वहां से दो तीन मील की दूरी पर था। वहां पर झण्डू नाम का एक गुज्जर रहता था। किसी जन ने उसके घर में सरकारी महकमें के औज़ार और तार रख दिए और उससे कहा कि यह मेरा माल है, तुम इसे अपने पास रख लो। पुलिस को पता लगा, उसके घर की तलाशी ली गई। झण्डू बहुत गिड़गिड़ाया लेकिन थानेदार साहब ने उसकी एक न सुनी। उस से सौ रुपए ले कर छोड़ दिया गया। पण्डित विष्णुदत ने नोटों की गड्डी झण्डू के हाथों में रख दी और हाथ जोड़ कर उससे माफी मांगी। गांव के सीधे सादे लोग आंखें फाड़ फाड़ कर हमारी तरफ देख रहे थे। उन्हें विश्वास नहीं होता था कि इस कलियुग में कोई थानेदार किसी के मारे हुए रुपये वापस कर दे।

(3) इसके बाद हम रियासत कलसिया के एक गांव में पहुंचे। वहां एक जागीरदार सरदार.... सिंह रहते थे। एक बार वह रियासत नाहन में मेला देख कर अपने घर को बाल बच्चों समेत बैलगाड़ी में लौट रहे थे। जब उनकी बैल गाड़ी का निरीक्षण किया गया, तो मालूम हुआ कि सब ने शराब पी रखी है। नौजवान लड़कियों के मुंह से भी शराब की बदबू आ रही थी। बैलगाड़ी में से कुछ शराब की बोतलें और अफ़ीम भी बरामद हुई। इन्होंने सरदार सिंह को सौ रुपया लेकर छोड़ा था। हमने वहां पहुंच कर गांव के लोगों को इकट्ठा किया। मेरे साथी ने सारे हालात का शुरू से आखिर तक ज़िकर किया है जागीरदार साहब से हाथ जोड़ कर माफ़ी मांगी और उनके रुपये वापस किए। जागीरदार साहब रुपये ग्रहण नहीं करते थे, जिस पर मेरे साथी ने कहा कि यदि आप रुपया न लेंगे, तो मैं आप के घर पर धरना मार कर बैठा रहूंगा।

(4) वहां से चल कर हम एक और गांव में पहुंचे और एक चौपाल में जा कर ठहर गए। चौकीदार को भेज कर नम्बरदारों और अन्य लोगों को इकट्ठा किया। सब कहते थे कि थानेदार साहब आ गए हैं और वह उनकी आवभगत के लिए इधर उधर भाग रहे थे। मेरे साथी ने कहा कि पहले मेरी बात सुन लो, मैं यहां एक विशेष काम के लिए आया हूँ। इस समय तुम्हारे स्वागत का अधिकारी नहीं हूं, बल्कि लानत मुलामत किए जाने के लायक हूँ। उपस्थित जनों में से

एक जन छज्जू राम ब्राह्मण की ओर संकेत करके इन्होंने कहा कि इनके भाई की बिजली गिरने से मौत हो गई थी और इन्होंने पुलिस को सूचना दिए बगैर उसका दाह संस्कार कर दिया था। पता लगने पर मैंने इन को पकड़ लिया और ..... रुपये लेकर छोड़ा। छज्जू राम! मैंने आप पर बहुत अन्याय किया था। तुम्हारे भाई की मौत हो गई थी और तुमने रुपये देकर मुझ ज़ालिम से अपनी जान छुड़ाई थी। इस समय मैं तुम्हारा मुज़लिम हूँ। सज़ा देना चाहे तो दे लो। यह कह कर पण्डित विष्णुदत ने हाथ जोड़ लिए और अपना सिर झुका लिया। उन्होंने रुपये छज्जू राम को वापस किए। यह दृश्य स्वर्गीय था। कई जन आसमान की ओर हाथ उठा कर कह रहे थे कि अब सतयुग आ गया है। छज्जू राम ने कुछ रुपये एक जन को उसी सभा में वापस किए, क्योंकि उससे उधार लेकर रकम थानेदाार साहब को दी थी। और एक साल के बाद तक वह गरीब यह उधार की रकम वापस नहीं कर सका था।

(5) उसी गांव में जोती नाम का एक दरजी रहता था। उसका अपने भाई के साथ मकान के बंटवारे के बारे में झगड़ा हो गया था। जोती थाने में गया। और मेरे साथी थानेदार साहब ने.... रुपये लेकर उनका मामला रफा दफ़ा कर दिया। यह रुपये जोती के चाचा को दिए गए क्योंकि जोती उस समय कहीं बाहर गया हुआ था

(6) शाम को रही थी। हम दोनों आगे रवाना हो गए। पांच छ: मील की दूरी पर एक और गांव में पहुंच गए। वहां सुन्दर सिंह नाम का एक मोची रहता था। मेरे साथी ने उससे जूतियां बनवा कर पहनी थीं लेकिन उसके पैसे नहीं दिए थे। सुन्दर सिंह को..... रुपये वापस किए गए। रात हो गई थी, इसलिए हम दोनों उस गांव में ठहरे। रात को हम दोनों ने लैक्चर दिए। आठ जनों ने धुम्रपान से बचे रहने की प्रतिज्ञा की।

(7) इसके बाद हम एक और गांव में पहुंचे। उस गांव की एक स्त्री का लड़का दूसरे गांव से एक भैंस चुरा लाया था और उस भैंस को कहीं और भेज दिया था ताकि पकड़ा न जाए। भैंस वाले आए और उस स्त्री की दो भैंसें हांक कर ले गए। स्त्री ने थाने में रिपोर्ट की। मेरे साथी विष्णुदत ने अस्सी रुपये एक पार्टी से और सत्तर रुपये दूसरी पार्टी से लेकर एक दूसरे को उनकी भैंसें दिला दीं और आपस की सुलह करा दी। दोनों पार्टियों को उनकी रकमें वापस की गईं।

(8) दोपहर को हम एक और गांव में चले गए। वहां किशना नम्बरदार रहता था। गांव में किसी के यहां चोरी हो गई थी। चोरी का शक किशना नम्बरदार के लड़के पृथ्वी सिंह पर था। दोनों को पकड़ लिया गया और ..... रुपये लेकर उनको छोड़ा..... रुपये किशना नम्बरदार को वापस किए। रात को हम उसी गांव में ठहरे। हम दोनों ने लोगों की सभा कराई। दस आदमियों ने धूम्रपान से बचने की प्रतिज्ञा की।

(9) अगले दिन हम .... पहुंचे, यहां एक लड़की का भाई सुन्दर सिंह रहता था। वह अपनी बहन की शादी एक जगह करना चाहता था, जबकि उसका एक और सम्बन्धी बख़्तावर सिंह दूसरी जगह करना चाहता था। बख़्तावर सिंह थाने में आया और ..... रुपये और मिठाई दे गया और थानेदार साहब को कहा कि आप कुछ न बोलना। वह लड़की अब मर चुकी है और उसकी शादी भी कहीं नहीं हुई। लोगों को बाज़ार में इकट्ठा करके बख़्तावर सिंह के रुपये वापस किए

और बख़्तावर सिंह से माफी मांगी। यहां एक पटवारी ने शोर गुल मचाना शुरू किया और कहा- लोगो! तुम्हें पता नहीं, यह थानेदार साहब रिश्वत के मामले में फंस गए हैं, इन पर कई मुकदमें चल रहे हैं। अब यह चुपके-चुपके सब के रुपये वापस कर रहे हैं। पण्डित विष्णुदत ने कुछ शब्दों में सारी बात लोगों को समझा दी और वह पटवारी जो खुद बड़ा रिश्वत खोर था, अपना सा मुंह लेकर रह गया। भगवान देवात्मा के देव प्रभाव जब किसी जन को मिलते हैं, तो फिर पापों का परिशोध कराते हैं और हज़म शुदा रकमें वापस दिलवाते हैं।

विज्ञान और रूड़िवादी धार्मिकता

हमारे घर में दो बज़ुरग हैं, जिनकी सुनने की क्षमता बहुत कम है। इस संसार में कितने करोड़ लोग हैं, जो इस समस्या से जूझ रहे थे, परन्तु वैज्ञानिकों ने ऐसी मशीन का अविष्कार कर दिया, जिससे उनकी ज़िन्दगी खुशगवार हो गई, इस विज्ञान की शिक्षा को हम मानते हैं।

कितने करोड़ लोग हैं जिनकी आँखों की दृष्टि कमज़ोर हो जाती थी, वह बहुत दुख भरी ज़िन्दगी जीते रहे, परन्तु लैंज़ वा चश्में के अविष्कार ने उनकी ज़िन्दगी बदल दी। इस विज्ञान के अविष्कार को भी हम मानते हैं, वैज्ञानिकों ने वह कर दिखाया जो पहले नहीं था। इस परिवर्तन को भी हम मानते हैं।

पैरों हाथों से अपाहजों के लिए वैज्ञानिकों ने कृत्रिम अंग बना दिए, कितना बड़ा विज्ञान का क़िश्मा है- भिन्न प्रकार की बिमारियों के वैज्ञानिकों ने ईलाज़ ढूड़कर, मानवता को वरदान दिया है। कोई समय था जब मानवता मन्त्र, तन्त्र, टोटके प्रयोग करके ईलाज करती थी, अब हर कोई यज्ञ, हवन भी करता रहे, परन्तु डाक्टरों के पास भागता है, सिर्फ धर्म के ढोंग करके घर में नहीं बैठता, धीरे 2 विज्ञान की खोज को इस पक्ष में मानवता ने स्वीकार कर लिया है। होम्योपैथी हो या एलोपैथी या आयुर्वेद का ईलाज करवाने के लिए सब जाग्रित हैं। कहेंगे फिर भी परमात्मा ने बचा दिया, डाक्टरों के मेहनत और वैज्ञानिकों की खोज के आगे सिर नहीं झुकाते।

वैज्ञानिकों ने आवगमन के साधनों का अविष्कार करके मानवता को न केवल शहरों, गांवों बल्कि देश, विदेश से जोड़ दिया। व्यापार बढ़ गए सभ्यताएं विकसित हो गई। यह सब विज्ञान की देन है न कि किसी दिव्य शक्ति की।

रेडियो, टी.वी., मोबाईल कम्पयूटर, बिजली सम्बन्धी उपकरणों का भी वैज्ञानिकों की अनथक मेहनतों का दान है, इन सब अविष्कारों को हम गिन नहीं सकते। भाषा, सभ्यता, कला कौशल भी विकसित हुए हैं। मानव अधिकारों के लिए डिर्पाटमैंट बन गए। पशुओं के अधिकारों के लिए कानून बन रहे हैं, इस प्रकार विकास की ओर मानवता के कदम बढ़ रहे हैं, परन्तु इतना विकास पाकर भी अभी रूड़िवादी विचारों ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा। मनुष्य की उत्पत्ति की

खोज ने इस विचार को नकार दिया कि मनुष्य की उत्पत्ति किसी परमात्मा या ब्रह्मा ने की है। इस एक खोज के लिए वैज्ञानिकों ने कितने कष्ट सहे हैं, उसका अनुमान लगाना कठिन है। अब बच्चे स्कूलों में यही पढ़ते हैं कि विकास के क्रम में मनुष्य की उत्पति हुई है और बन्दरों के विकास से मनुष्य का विकास हुआ। बन्दरों से आगे मनुष्य को उन्नतशील बुद्धिशक्ति मिली। बन्दर विज्ञानी नहीं बन सकता, मनुष्य को बुद्धि शक्ति मिली, जो दिन पर दिन विकसित हो रही है। इसी विकास क्रम ने वैज्ञानिकों को पैदा किया है। खोज है, तो विज्ञान है, जिज्ञासा है तो विज्ञान है, तर्क है तो विज्ञान है। परिवर्तन है और परिवर्तन के नियम हैं तो वैज्ञानिक सोच है।

परिवर्तन के नियम को भी वैज्ञानिकों ने खोजा है, हमारी सोच, व्यवहार, गुणों, अवगुणों में परिवर्तन होता है। हम पहले से बेहतर बन रहे हैं या घटिया बन रहे हैं। यह परिवर्तन लगातार हर भौतिक, पशु और वनस्पति वा मनुष्य जगत में हो रहा है। प्रत्येक वस्तु पहले से बेहतर हो रही है या बद्तर हो रही है। मनुष्य के परिवर्तन को हम देख सकते हैं। पहले कोमल हृदय था, अब कठोर हो गया, कठोर होकर मांसाहारी, दूसरों की सुख शान्ति को अपहरण करने वाला बन गया। पहले निंदक नहीं थे, अब निन्दा में खुशी मिलती है, घण्टों निन्दा विषयक बातचीत करने लगे हैं- पहले ईमानदार थे, धीरे 2 बेईमान बन गए- पहले माता पिता का सम्मान करते थे, अब उनका अपमान करने लग गए, या उनकी ओर से उदासीन हो गए हैं आदि आदि। किसी भी पक्ष में हम पहले से घटिया बनते हैं, तो हमारा नीच परिवर्तन है, यदि पहले से अच्छे गुण विकसित हो गए तो हमारे भीतर विकासकारी परिवर्तन आ गया। इस विज्ञान को समझकर मनुष्य अपने आपको समझ सकता है। मनुष्य में पशुओं से सुख दुख का बोध आया है। इसलिए किसी हद तक पशुवृति भी मनुष्य में आई है। अपने सुख के लिए मनुष्य कितना निर्दयी, कितना बेईमान, कितना स्वार्थी, कितना घमंडी, आतंकवादी, कितना कृतघ्न बन गया है, उसके दृश्य हर रोज़ देखने और पढ़ने को मिलते हैं। ऐसे दृश्य पशुओं में अकसर नहीं मिलते।

विज्ञान हर पक्ष में सत्य और अटल नियमों का ज्ञान देता है। अटल नियमों को खोजना, तर्क विधि की कसौटी पर परख़ना विज्ञान का काम है। पानी बनने का नियम सबके लिए एक है। शरीर को स्वस्थ्य रखने के नियम सबके लिए एक हैं, धर्म पर भी यही अटल नियम काम करते हैं। धार्मिक विश्वास जो तर्क वा अटल नियमों पर खरे उतरते हैं, वही मान्य हैं। अटल नियम जैसे और पक्षों में एक हैं, धर्म पर भी एक होने चाहिए और वास्तव में है, बेशक हम धर्मों द्वारा फैलाए हुए डर वा अन्धविश्वासों में पड़कर कोई पाठ, पूजा, स्नान, जन्त्र मन्त्र पढते रहें परन्तु अध्यात्मिक रूप से किसी जन में कोई अच्छा परिवर्तन नहीं आ सकता। यदि आता तो न बेईमानी होती, न बलात्कार होते, न अत्याचार होते, सम्बन्धों में मेल मिलाप होता, न स्वार्थ होता। बड़े 2 लीडर सब पाठ, पूजा करते वा करवाते हैं, परन्तु उनके द्वारा बेईमानी, षड़यन्त्र, झूठे वायदे जग ज़ाहिर हैं।

चाहे पश्चिमी देशों ने विज्ञान के प्रकाश में कुछ कुछ छुटकारा पा लिया है, परन्तु आत्मा की सत्य शिक्षा से वह भी वंचित हैं। मनुष्य के

स्वभाव, उसके आत्मा की गठन, के विषय में कोई रोशनी नहीं रखते।

हमारी खुशनसीबी है कि इस संसार में अध्यात्मिक जगत के महान वैज्ञानिक का जन्म हो चुका है जिन्होंने धर्म जगत में अध्यात्मिक सत्यों को विज्ञान के आधार पर खोजा है। सबसे मुख्य सच्चाई जो उन्होंने बताई है कि मनुष्य की प्रकृति में सुख अनुराग बढ़ने से ही नाना प्रकार की बुराईयों की उत्पत्ति होती है।
उन्होंने फरमाया है :-

"मनुष्य मुख्यत: अपने एक वा दूसरे सुख अनुराग वा दुख विषयक घृणा भाव से परिचालित होकर ही कोई क्रिया करता है। विकास क्रम ने वैज्ञानिकों को पैदा किया है। यद्यपि यह सच है, कि उसकी कई क्रियाओं से एक वा दूसरे प्रकार के शुभ की उत्पत्ति भी हो जाती है अर्थात मनुष्य अपने विविध प्रकार के सुख अनुरागों और दुख विषयक घृणा भावों से परिचालित होकर जहां नाना प्रकार की मिथ्या, अभिताचार, अत्याचार आदि मूलक विविध प्रकार की महा पतनकारी क्रियाएं करता है, वहां वह नाना सम्बन्धों में कई प्रकार की ऐसी क्रियाएं भी करता है कि जो नेचर के विविध जीवित और अजीवित अस्तित्वों के लिए हितकर होती है परन्तु वह इस प्रकार की विविध हितकर क्रियाओं को मुख्यता अपने किसी न किसी प्रकार के सुख अनुराग से परिचालित होकर ही करता है।"

"जिस किसी सुख का अनुराग जितना अधिक बलवान होता है, उस अधिक बलवान सुख अनुराग से परिचालित होकर उसकी प्राप्ति के निमित्त वह जानबूझकर भी, परन्तु विविश होकर ऐसी विविध क्रियाएं करता है, कि जो न केवल उसके आत्मा के लिए सुखदायक होती हैं, किन्तु कई दशाओं में उसके शरीर के लिए भी बहुत अहितकर, यहां तक कि प्राणनाशक तक प्रमाणित होती हैं।"

"कितने ही मनुष्य शराब, तम्बाकू, भंग, चरस आदि के पीने और अफीम और कोकेन आदि नशेदार और जहरीली चीज़ों के खाने वाले, रिश्वत लेने वाले, व्यभिचारी, वा मांसाहारी, झूठे, धोखेबाज़, कपटी, विश्वासघाती बन जाते हैं।"

यह आत्मा का विज्ञान परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने खोजा है। उनकी वैज्ञानिक शिक्षा के अनुसार मनुष्य को चलाने वाला कोई परमात्मा या दैवी शक्ति नहीं बल्कि उसकी सुख वा दुख विषयक अनुराग शक्तियां है। यदि मनुष्य को परमात्मा चलाता तो क्या जो बुराईयां संसार में दिन पर दिन बढ़ रही हैं, वह बढ़ने देता? यह तर्क का विषय है, अन्धविश्वास तर्क करने नहीं देते।

यदि हमने अपने आपको सुधारना है, समाज को सुधारना है तो अपनी आन्तरिक भाव शक्तियों का ज्ञान पाना अवश्यक है। हमें कौन कौन सी शक्तियां चला रही हैं, और हमारे से क्या क्या गतियां करवाती हैं, इनका ज्ञान पाना आवश्यक है। देवात्मा सत्गुरू की आत्मा के विषय वैज्ञानिक इस खोज ने वा उनके देव प्रभावों ने मनुष्यों में अश्चार्यजनक परिवर्तन किए हैं, जो किसी धर्म में नहीं होते।

तर्क, विज्ञान का हर पक्ष में मुख्य स्थान होना चाहिए, धर्म में भी यह अति आवश्यक है।

-गोपाल कृष्ण

परलोक के सम्बन्ध में वैज्ञानिक सत्य

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने चारों जगतों से सम्बन्धित जो आदेश दिए हैं, उनका कुछ भी अनुकरण करने से मानवता में सुख शान्ति का राज्य आ सकता है। अब 14 अक्तूबर को परलोक के सम्बन्ध में आख़िरी साधन है। हमें अपने परलोक वासी सम्बन्धियों के साथ भी सन्मान वा श्रद्धा भाव रखना चाहिए। उनकी सेवाओं वा उपकारों को याद करके उनके आगे झुकना चाहिए। उनके लिए शुभ कामना वा आर्शीवाद प्रार्थना करनी चाहिए। यह विश्वास विज्ञान पर आधारित है कि इस पृथ्वी से परे एक सूक्ष्म लोक है, जहां हमारे परलोक वासी सम्बन्धी अपनी 2 आत्मिक योग्यता के अनुसार वास करते हैं। अपनी योग्यता के अनुसार किसी सुझाव वा प्रार्थना के द्वारा वह हमारी सहायता भी करते हैं। मीडियम की विशेष योग्यता रखने वाले जनों के द्वारा बोलकर वा लिखकर वह अपना सन्देश भी दे सकते हैं। परन्तु सच्चा मीडियम मिलना बहुत कठिन है। परलोक वासियों के सम्बन्ध में जो कोई अपराध किए हों, उनके लिए बार 2 उन्हें याद करके क्षमा प्रार्थी होना चाहिए।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने परलोक के सम्बन्ध में वैज्ञानिक सत्य खोजे हैं। विकास क्रम के पूर्ण विश्वासी होकर भगवान देवात्मा मनुष्य के मरने के बाद भी उसके विकास और विनाश के पूर्ण विश्वासी थे। इसके लिए जो भी साहित्य उपलब्ध था, उन्होंने उसका अध्ययन किया और बहुत संग्राम के बाद उन्हें एक मीडियम लड़की मिल गई, जिसके द्वारा उनका सम्पर्क परलोक वासियों से सम्भव हो सका और बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी उनसे मिलने लगी। परम पूजनीय भगवान की परलोक सम्बन्धी शिक्षा के अनुसार उन्होंने फरमाया है :-

"मनुष्य का आत्मा ही उसके शरीर का निर्माण कर्ता, पालन कर्ता और अधिपति है। उसी के शरीर में वर्तमान रहने से शरीर जीवित रहता है, और उसी के वियोग से शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है। यही आत्मा स्थूल शरीर की मृत्यु के पश्चात अपने भीतर सूक्ष्म शरीर निर्माण विषयक शक्ति रखने और अपनी देह में से आवश्यक मात्रा में सूक्ष्म परमाणुओं के प्राप्त होने पर अपने पहले शरीर के अनुरूप एक नया शरीर निर्माण करता है, और फिर पहले की न्याई पूर्ण मनुष्य बन जाता है।"

यह वैज्ञानिक सत्य, आत्मा के विषय में पूर्ण सत्य अनुरागी, आत्मा के सम्बन्ध में पूर्ण सत्य अनुसन्धान कर्ता परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने खोजे हैं और व्यक्तिगत अनुभव भी किया है।

अब प्रश्न उठता है कि क्या सारे मनुष्यात्मा मृत्यु के बाद सूक्ष्म सैल बनाने के योग्य होते हैं? नहीं।

(1) शरीर पूर्णत: जल जाने के कारण (2) या बम्ब से चीथड़े उड़ जाने पर (3) बिजली के गिरने से शरीर के छिन्न भिन्न हो जाने पर (4) किसी ढेर में दब जाने पर - सूक्ष्म शरीर बनाने में मनुष्य अक्षम होता है।

आगे परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है

"स्थूल शरीर में जब मृत्यु का कार्य आरम्भ हो जाता है, तब उस समय से लेकर जब

तक श्वास क्रिया का शेष नहीं हो जाता तब तक उसके भीतर से ऐसे सूक्ष्म परमाणु, कि जो स्थूल दृष्टि से दिखाई नहीं देते, धुएं की न्याई सिर से निकलते रहते हैं और उससे कुछ दूरी पर इकट्ठे होते रहते हैं। जब शरीर के सब सूक्ष्म परमाणु बाहर निकल कर इकट्ठे हो जाते हैं, तब उन्हें लेकर जीवनी शक्ति अपने लिए सूक्ष्म शरीर के निर्माण का कार्य आरम्भ करती है, और जैसे शुक्राणु से मां के शरीर के परमाणु से धीरे धीरे बच्चा बनता है, वैसे ही इन परमाणुओं से उसके पहले शरीर के अनुरूप एक नया सूक्ष्म शरीर बन जाता है, और फिर यह क्रम क्रम से बोध लाभ करके पहले की सदृश फिर पूर्ण और चेतन मनुष्य बन जाता है।"

स्थूल शरीर की मृत्यु के अनन्तर 3 - 5 घण्टे में यह सूक्ष्म शरीर की प्रक्रिया पूरी हो जाती है और शरीर मृत्यु अवस्था में पहुँच जाता है, यह सूक्ष्म सैल सिर की ओर इकट्ठे होते है सूक्ष्म शरीर बनाने में कोई विघ्न न पड़े, इसलिए सिर की ओर कोई जन न बैठे न गुजरे। जैसे बच्चे के जन्म के समय कितने प्रकार के ख्याल रखने पड़ते हैं, उसी प्रकार सूक्ष्म शरीर निर्माण करने में भी विघ्न पड़ने से कई प्रकार के व्यवधान पड़ जाते हैं।

साधारणत: मृत व्यक्ति के सम्बन्धी वा कई परोपकारी जन सूक्ष्म शरीर धारी मृत्यु प्राय: जन की सहायता करते हैं और उस नई सूक्ष्म पृथ्वी में ले जाने में उसकी सहायता करते हैं। आगे परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है :-

"परलोक सम्बन्धी पृथ्वी अपनी अपेक्षाकृत आला वा अधिक सूक्ष्म अवस्था के विचार से बहुत से लोकों में विभक्त है। और यह सब लोक अपनी अपनी अपेक्षाकृत निम्न अथवा उच्च अवस्था के अनुसार विविध प्रकार के जीवधारियों को धारण और पोषण करते हैं और उसका एक भाग जो यहाँ से जाते हुए पहले आता है, और जो अधिकांश रूप से वृक्षों से ही भरा होता है, वह वहां का उद्भिद लोक कहलाता है। और उसके आगे का भाग जिसमें अधिकांश पशु ही रहते हैं, पशु लोक कहलाता है। फिर उससे आगे का भाग जिसमें अधिकांश रूप से मनुष्यों के बच्चे ही रहते हैं, शिशुलोक कहलाता है, फिर उसके आगे के भाग में प्रथम श्रेणी के मनुष्यात्मा रहते हैं और वह पहला लोक कहलाता है। फिर उससे आगे का लोक जो दूसरी श्रेणी के मनुष्यात्माओं के वास के योग्य है, दूसरा लोक कहलाता है। और इसी प्रकार जो तीसरी श्रेणी के मनुष्यों के वास के योग्य है, वह तीसरा लोक"

इस प्रकार मनुष्यात्माओं की आत्माओं की योग्यता के अनुसार चौथा, पाँचवा, छटा आदि लोक हैं। परलोक में इस पृथ्वी की तरह अच्छे बुरे लोग इकट्ठे नहीं होते। जो नेक, परोपकारी, और मोटे पापों से बचे होते है, अपनी अवस्था के अनुसार वह उसी लोक में जाते है, जो उनकी योग्यता के अनुसार होता है।

जो आत्मा पापी, अत्याचारी, स्वार्थी, आतंकवादी, षडयन्त्रकारी, बेईमान, मोह अनुरागी बनकर इस पृथ्वी के सामानों से, परिवार से, बन्धे होते हैं वह अधम लोक अर्थात इसी पृथ्वी के गिर्द घूमते रहते हैं और तरह 2 के दुख भोगते हैं।

हम इस पृथ्वी पर रहकर जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, वैसे ही सूक्ष्म सैल निर्माण होते हैं। जिस अंग से विनाश का काम होता है, वह अंग अधूरा बनता है, उदाहरणत: जो कसाई हैं,

उनके हाथ या तो बनते ही नहीं या बहुत अधूरे बनते हैं। हमारे हाथों के द्वारा, बुरी निग़ाहों के द्वारा, नीच चिन्ताओं के द्वारा, दूसरों के मान, इज्जत, माल अपहरण करने के द्वारा जो भी ग़ल्त काम होते हैं, उसके अनुसार ही हमारे सूक्ष्म अंगों का निर्माण होता है।

अगर यह सच्चाई वास्तव में हमारे सन्मुख आ जाए, तो हमारे जीवन का कांटा बदल जाए, परन्तु हम सुख अनुरागी मनुष्यात्मा इस सच्चाई को जीवन में उतारने में असमर्थ हैं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभाव ही हमें कुछ सुध दे सकते हैं।

उपरोक्त वैज्ञानिक खोज के बाद यह स्पष्ट है कि आत्मा विकास और विनाश के नियम के अधीन है। बुरे कर्मों से उसका विनाश होता है और परलोक में घुल घुलकर खत्म हो जाता है। विकासकारी गतियों से ही उसका विकास होता है और अधिक से अधिक समय तक परलोक में जीने के योग्य होता है। इसलिए यह अटल सत्य है कि आत्मा अमर नहीं। उसका जन्म माता पिता से होता है, इसलिए पूर्नजन्म की शिक्षा भी पूर्णत: मिथ्या है।

ऐसी कामना है कि हम अर्थात मैं और आप इस पृथ्वी पर रहते 2 आत्मा को विनाशकारी गतियों से बचकर विकास के पथ पर चल सकें, इसी में हम सब की भलाई है। देव प्रभावों का वातावरण मिलता रहे, तभी कुछ होश ठिकाने रहती है।

-सुरजीत बराड़

अपने आपका ज्ञान - 3

पिछले अंक में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षा के अनुसार हमने सन्तान अनुराग पर विचार किया था। एक और महा रोग जो मानवता में फैला हुआ है, जिसके भयानक परिणाम निकल रहे है वह है :- धन अनुराग।

धन हमारी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अहम स्थान रखता है। यह हम सब जानते हैं। गरीबी एक बहुत बड़ा श्राप है। परन्तु धन से अपने सुखों की तृप्ति करते 2 मनुष्य धन का अनुरागी हो जाता है। और इस नीच अनुराग से पाप और मिथ्या की उत्पति होती है। जैसे- धन कमाते कमाते मनुष्य का लक्ष्य ही धन कमाना बन जाता है, कोई और उच्च लक्ष्य बनाने का समय ही नहीं मिलता। सारा दिन इन्सान कैसे धन बढ़ाना है, कैसे बचाना है उसकी सोच विचार में ही उलझा रहता है। यहां तक देखा गया है कि शमशान घाट में एक तरफ दाह संस्कार होता है, दूसरी तरफ कितने लोग रुपयों के सौदों वा धन सम्बन्धी वार्तालाप में Busy होते हैं। मुर्दे को जलता देखकर भी जीवन की असारता पर सोच नहीं जाती। देखते भी हैं कि जिस जन ने सारी उमर जो कमाई की वह कुछ भी अपने साथ नहीं लेकर जा रहा परन्तु सुख अनुराग ही क्या हुए जो वास्तविकता को देखने दें।

धन अनुराग से परिचालित होकर बहुत से जन रिश्वत लेते हैं। बहुत से नाना प्रकार के अपहरणकारी वा पाप कर्म करते हैं, बच्चों का अपहरण करके उनके हाथ पांव तोड़ देते हैं, कई आंखे तक निकाल देते हैं और बच्चों से भीख मंगवाते है। प्रतिवर्ष बच्चों के अपहरण की घटनाएं लाखों की गिणती में होती हैं, जिसका आंकड़ा अख़बार में भी आया था। सब मुल्कों में बच्चे गायब होते हैं। अपहरणकर्ता केवल धन प्राप्त

करने के लिए और स्वयं निकम्में और स्वार्थी रहकर धन प्राप्ति करके अत्याचारी बनते हैं।

लाखों जन पशुओं का वध करते हैं। जरूरत से अधिक पशुओं से काम लेते हैं। बूढ़े होने पर पैसा कमाने के लिए कसाईयों को बेच देते हैं। लाखों लोग अमानत में ख़्यानत करते हैं। हिसाब में हेर फेर करके धन हासिल करते हैं। लाखों लोग ग़ल्त तरीके से काला धन (जिसका कोई हिसाब वा Documentation नहीं होता) रखते है। हम देखते हैं कि हमारे बड़े-2 लीडर लाखों, करोड़ों के घपले करते हैं, छापे मारे जाते हैं, जेल जाते हैं और सरे बाज़ार ख़्वार होते हैं। लाखों लोग जाली कागज़ बनाकर दूसरों की सम्पति को हड़प लेते हैं। लाखों लोग अपने ज्ञान की झूठी तारीफ़ करके बाज़ार में अपना सामान बेचते हैं, लोगों को बेवकूफ बनाते हैं। सगे माता पिता अपनी बच्चियों को बेच देते हैं या वैश्या बना देते हैं। लाखों लोग सांझेदारी में बेईमानी करके, दूसरे साथी को घाटा दिखाकर खुद उस व्यापार पर कब्ज़ा कर लेते हैं।

लाखों लोग धन कमाने के लिए नशों का व्यापार करते हैं, जिसकी उदाहरणें आजकल पग पग पर मिलती हैं। यह व्यापार इतना बढ़ गया है कि अब सरकारों के काबू से बाहर हो गया है, सरकारों और पुलिस की मिलीभगत से भी यह काम होता है। हमारे नौजवान बच्चे मौत के मुंह में जा रहे हैं। परिवारों के परिवार तबाह हो गए है।

8.9.2023 के अखबार में छपी रिर्पोट के अनुसार पिछले सात वर्षो में 792 तस्करों ने बनाई 349 करोड़ की सम्पत्ति इसके अलावा वह जितना पैसा यहां वहां प्रापर्टी पर खर्च करते है, उससे ज्यादा पैसा हवाला से अमरीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, कैनेडा और जर्मनी आदि में भेजते हैं, ताकि पुलीस के हाथ न लगे, होटलों, रिर्जाटों, ढाबों में तस्करी होती है।

यह सब कुछ धन अनुराग की ही लीला है। किसी की जान जाती है तो जाए परन्तु उनको धन मिलना चाहिए, धन अनुराग अन्यायकारी बना देता है। धन को प्राप्त करना जितना ज़रूरी है उतना धन अनुराग के भयानक परिणाम निकलते हैं।

बहुत से धन अनुरागी इतने कंजूस हो जाते हैं कि अपनी वा अपने परिवार की ज़रूरी आवश्यकताओं पर भी खर्च नहीं कर सकते, धन को अपने से अलग करते हुए उनकी जान टूटती है।

धन अनुरागी जन किसी सेवा के काम में अपना धन देना नहीं चाहता। कई बार वातावरण से प्रभावित होकर कुछ ज्यादा दान करने की सोचता है तो बैठे 2 ही वह उस रक्म को कम करने लगता है और अपने से ही बेईमान बन जाता है।

धन अनुरागी जन किसी संस्था का यहां तक कि धार्मिक स्थानों का हिसाब रखते रखते बेईमानी करने लगता हैं। कोई धार्मिक स्थान होगा जहां हिसाब में हेराफेरी न हो। धर्म की पुकार मचाता मचाता धन अनुरागी पूर्ण अधार्मिक बन जाता है।

कितने जन गहनों वा रुपयों का लालच देकर दूसरे इन्सानों को लूट लेते हैं। लूटने वाले और लूटे जाने वाले सब धन अनुरागी होते हैं। क्योंकि धन अनुराग मनुष्य को लालची बना देता है।

परम पूजीय भगवान देवात्मा ने निर्धारित प्रतिज्ञाओं में निम्नलिखित प्रतिज्ञाएं करवा कर

धन कमाने के ग़ल्त तरीकों पर रोक लगा दी है।

1– किसी प्रकार का नशा न करना वा न करने में किसी की सहायता करना।

इस प्रतिज्ञा से देव समाज के सब सेवक हर प्रकार के नशे से न केवल खुद बचते हैं, नशे का कोई व्यापार भी नहीं कर सकते। इसलिए अपने व्यापार में सिगरेट वा अन्य नशे बेचने वालों ने कितनी कीमत की सिगरेटों के पैकट बाहर फैंक दिए और शराब की बोतलें पानी में बहा दी। कितनी बड़ी रक्षा! और इससे समाज में कितना हित पैदा होता है। घरों में नशों के चले जाने से कितनी सुख शान्ति आ जाती है। धन के लालच से भी सेवक कुछ ऊँचे उठ जाते हैं।

2. जुआ न खेलने और लाटरी आदि की टिकट न खरीदने से मनुष्य की किस क़दर रक्षा हो सकती है। मोगा विकासालय के पास एक सेठ की कोठी थी, वह बहुत अचछे सेवक थे परन्तु उन्हें जुए की लत लग गई। देव समाज की प्रतिज्ञा टूटने पर वह सेवक न रहे। धीरे 2 उनकी इस लत ने उनका घर बार बिकवा दिया। खाने के भी हालात नहीं रहे, वह विकासालय में आ जाते, तो श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी का हुक्म था कि जब भी वह आएं उन्हें लंगर से खाना दिया जाए। जुआ क्या है, ज्यादा धन प्राप्त करने की लालसा। हम सेवकों की जुआ न खेलने की प्रतिज्ञा करने से कितनी बड़ी रक्षा हुई है।

3– रिश्वत न लेने की प्रतिज्ञा करके देव समाज के मैंबरों ने ईमानदारी की मिसालें पैदा की हैं। बड़े 2 पदों पर होकर सेवकों ने रिश्वत को ठुकराया है। उसे विशेष कर कितने पटवारियों ने रिश्वत से तोबा की और पहली ली हुई रिश्वतें वापिस की हैं। मुफ्त में धन कमाने की लालसा पर यह प्रतिज्ञा रोक लगाती है। ईमानदारी से धन कमाने को मनुष्य सच्ची कमाई समझने लगता है।

4– किसी का धन वा सम्पत्ति को न हड़पने की प्रतिज्ञा भी प्रतिज्ञाओं में शामिल है।

यह प्रतिज्ञाएं इन्सान को लालच, स्वार्थीपन, दूसरों के धन वा जायदाद को हथिया लेने, चोरी न करने के पापों से रक्षा करती है। अन्यायकारी बनने से बचाती हैं।

यह प्रतिज्ञाएं केवल धन सम्बन्धी बेईमानी से रक्षा नहीं करती, इसके भिन्न और प्रतिज्ञाएं भी हैं जो हमें पाप वा मिथ्या से निकालती हैं, जिनका ज़िकर फिर कभी करेंगे।

अब उपरोक्त धन सम्बन्धी बुराईयों को पढ़कर हम अपनी ओर ध्यान ले जाएं कि कहां तक हमारे ऊपर धन अनुराग का अधिकार है। क्या हमारा लक्ष्य केवल धन कमाना है या धन के द्वारा सेवाकारी होकर, धन का कुछ न कुछ त्याग करके अपने आत्मा का भला करना है और जीवन को और धन को भी सफल करना है।

अहंकार, घृणा, ईर्षा, द्वेष, स्वार्थ, मान बड़ाई आदि बुराईयां का त्याग बहुत तपस्या चाहता है, परन्तु सबसे आसान त्याग धन का है। जितना हम धन को दूसरों की भलाई में खर्च करते हैं, धन के द्वारा किसी का उत्थान करते हैं, उतना ही हमारा भला होता है।

धन अनुराग मनुष्य को घमण्डी भी बना देता है। धनी लोग अपने से छोटों को गिणती में नहीं लाते। धन अनुराग अपनी जंजीरों में जकड़ कर अपना गुलाम बना लेता है। वह अन्यायकारी, अपहरणकारी और स्वार्थी बनाता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने बड़े 2 धन अनुरागियों को बदल कर अपना सब कुछ

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

परोपकार में लगा देने के लिए विवश कर दिया। धन अनुरागी अपने सगे सम्बन्धियों का भी सगा नहीं रहता। पूजनीय भगवान की शरण में आकर कितने धन अनुरागियों ने अपने भाईयों को अपने से अधिक ज़मीन जायदाद का अधिकार देकर उनके सम्बन्धों को स्वर्गीय बना दिया है।

हम सोचें जो धन हम कमाते हैं, उसको कहां तक दूसरों के लिए खर्च करके अच्छे कामों में दान देकर सफल करते है? नहीं तो धन अनुराग हमारे लिए श्राप बन जाएगा।

–सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

सत्य देव की जय,

30.08.2023 : मैं कल (9.9.2023) को मल्लेका वापिस पहुँच गया। जयपुर में नये श्रद्धालु जन 'जमना लाल' जी को मिला उन्हें 2 पुस्तकें दीं, प्रोग्राम का निमन्त्रण दिया 1-½ घंटा भर बातचीत हुई, वह खुश हुए और उत्सव पर आने का खुशी-खुशी पक्का वायदा किया। जयपुर में परिवारिक जनों को करीब 2 दिनों में मिलने का बहुत समय मिला, पाखण्डों व सत्य शिक्षा के अनुरूप बातचीत होती रही वह बहुत प्रभावित हुए, वह अब तक सवाल-जवाब कर रहे हैं। (2.9.2023) को गंगानगर से 2 जनों में हितकर बातचीत हुई व उन्हें मल्लेका के प्रोग्राम का निमन्त्रण दिया। (3.09.2023) श्रीमान दीवान जी, अनिल जी व सुरेन्द्र भाटिया जी से मिला, राय मशवरा हुआ, कुछ सम्बन्धियों ने दान की रकम दी। एक और धर्म सम्बन्धी ने वायदा भी किया।

4.9.2023 (पदमपुर) : डा० साहब जी से मन्दिर की जगह व कई सम्बन्धित उलझनों के बारे में बात हुई तो उन्होंने कहा कि वे अब जल्दी से जल्दी इस मसले को ठीक करेंगे।

एक अन्य श्रद्धालु जन के साथ हितकर बातचीत हुई और वह प्रभावित होकर घर पर लेकर गया, व 1000/- रू का दान दिया वह पिछले कुछ समय से अच्छे भावों का प्रकाश करता है और हमारे कोन्टेक्ट में हैं।

5.9.2023, गंगानगर से मल्लेका आते समय रास्ते के एक गाँव में एक जन (दोस्त) बी.टैक किए हुए से वहाँ रुककर 3-4 घंटे मुलाकात की व नैतिक मुल्यों पर देव समाज से सम्बन्धित बातचीत हुई ।

–गोपाल कृष्ण

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts